

## Gurugun Shattrinshtshatrinshika Kulak Part 01

|             |  |
|-------------|--|
| Folder No.  | 022275   |
| Granth Name | Gurugun Shattrinshtshatrinshika Kulak<br>Part 01 |
| Author      | Ratnabodhivijay                                  |
| Publisher   | Jinshasan Aradhana Trust                         |
| Edition     | 1  |
| Year        | 2014   |
| Pages       | 430  |

### गुरुगुणषट्त्रिंशत्षट्त्रिंशिकाकुलकम् भाग ०१

|              |   |
|--------------|---|
| डो००२२२२ नं  | ०२२२७५                                      |
| ग्रन्थ       | गुरुगुणषट्त्रिंशत्षट्त्रिंशिकाकुलकम् भाग ०१ |
| लेखक         | रत्नभोषिविजय                                |
| प्रकाशक      | जिनशासन आराधना ट्रस्ट                       |
| आवृत्ति      | १   |
| प्रकाशन वर्ष | २०१४  |
| पृष्ठ        | ४३०   |

|                       |     |
|-----------------------|-----|
| मुख्य टाईटल           |     |
| प्रकाशकीय             | ५   |
| तस्मै श्री गुरवे नमः  | ६   |
| सुकृत अनुमोदना        | ८   |
| विषयानुक्रम           | १२  |
| वृत्तिकर्तुर्मङ्गलम्  | ३   |
| प्रथमवृत्तम्          | ४   |
| पडेलो श्लोक           | ५०  |
| प्रथमा षट्त्रिंशिका   | ८३  |
| पडेली छत्रीसी         | १४६ |
| द्वितीया षट्त्रिंशिका | २०८ |
| भीष्म छत्रीसी         | २३८ |
| तृतीया षट्त्रिंशिका   | २६५ |
| त्रीष्म छत्रीसी       | २८२ |
| चतुर्था षट्त्रिंशिका  | ३१४ |
| योथी छत्रीसी          | ३४४ |
| पञ्चमी षट्त्रिंशिका   | ३६६ |
| पांचमी छत्रीसी        | ३७३ |
| षष्ठी षट्त्रिंशिका    | ३७८ |
| छट्ठी छत्रीसी         | ३८५ |